कथा सरिता

डरो मत

स्वामी विवेकानंद बचपन से ही निडर थे। जब वह लगभग 8 साल के थे, तभी से अपने एक मित्र के यहाँ खेलने जाया करते थे। उस मित्र के घर में एक चम्पक पेड़ लगा हुआ था। वह स्वामी जी का पसंदीदा पेड़ था और उन्हें उस पर लटक कर खेलना बहुत प्रिय था। रोज़ की तरह एक दिन वह उसी पेड़ को पकड़ कर झूल रहे थे कि तभी मित्र के दादा जी उनके पास पहुंचे। उन्हें डर था कि कहीं स्वामी जी उस पर से गिर न जाएं या कहीं पेड़ की डाल ही ना टूट जाए। इसलिए उन्होंने स्वामी जी को समझाते हुआ कहा, नरेन्द्र(स्वामी का नाम) तुम इस पेड़ से दूर रहो। अब दुबारा इस पर मत चढ़ना। क्यों? नरेन्द्र ने पूछा। दादा जी ने कहा - क्योंकि इस पेड़ पर एक ब्रह्मदैत्य रहता है। वो रात में सफेद कपड़े पहने घूमता है और देखने में बड़ा ही भयानक है।

नरेन्द्र को ये सब सुनकर थोड़ा अचरज हुआ। उसने दादा जी से दैत्य के बारे में और भी कुछ बताने का आग्रह किया। दादा जी बोले, वह पेड़ पर चढ़ने वाले लोगों की गर्दन तोड़ देता है। नरेन्द्र ने ये सब ध्यान से सुना और बिना कुछ कहे आगे बढ़ गया। दादा जी भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ गए। उन्हें लगा कि बच्चा डर गया पर स्वामी जी तो वापिस उसी पेड़ की डाल पर झूलने लगे। यह देख मित्र ज़ोर से चीखा। अरे तुमने दादा जी की बात नहीं सुनी, वो दैत्य तुम्हारी गर्दन तोड़ देगा।

बालक नरेन्द्र ज़ोर से हंसा और बोला, मित्र डरो मत। तुम भी कितने भोले हो। सिर्फ इसलिए कि किसी ने तुमसे कुछ कहा है उस पर यकीन मत करो। खुद ही सोचो अगर दादा जी की बात सच होती तो मेरी गर्दन कब की टूट चुकी होती। सचमुच स्वामी विवेकानंद बचपन से ही निडर और तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी थे।

गैलरी ही अच्छी

माँ ज़िद्द कर रही थी कि उसकी चारपाई गैलरी में डाल दें। बेटा परेशान था। "बहू बड़ाबड़ा रही थी, कोई बुजुर्गों को अलग कमरा नहीं देता, हमने दूसरी मंज़िल पर कमरा दिया, सब सुविधाएं हैं, नौकरानी भी दे रखी है, पता नहीं, सत्तर की उम्र में सठिया गई हैं!"

माँ कमज़ोर और बीमार है। ज़िद्द कर रही है तो उनकी चारपाई गैलरी में डलवा ही देते हैं- बेटे निकित ने सोचा। माँ की इच्छा को पूरा करना उसका स्वभाव था। अब माँ की चारपाई गैलरी में आ गई थी। हर समय चारपाई पर पड़ी रहने वाली माँ अब टहलते-टहलते गेट तक पहुंच जाती। कुछ देर लॉन में टहलती। लॉन में खेलते नाती-पोतों से बातें करती, हँसती, बोलती और मुस्कुराती। कभी-कभी बेटे से मनपसंद खाने की चीज़ें लाने की फरमाईश भी करती। खुद खाती, बहू बेटे और बच्चों को भी खिलाती। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य अच्छा होने लगा था।

दादी मेरी बॉल फेंको, गेट में प्रवेश करते हुए निकित ने अपने पाँच वर्षीय बेटे की आवाज़ सुनी तो बेटे को डांटने लगा। अंशुल, माँ बुजुर्ग है, उन्हें ऐसे कामों के लिए मत बोला करो। पापा, दादी रोज़ हमारी बॉल उठाकर फेंकती हैं। अंशुल भोलेपन से बोला। क्या! निकित ने आश्चर्य से माँ की तरफ देखा। हाँ बेटा, तुमने ऊपर वाले कमरे में सुविधाएं तो बहुत दी थीं। लेकिन अपनों का साथ नहीं था। तुम लोगों से बातें नहीं हो पाती थी। जब से गैलरी में चारपाई पड़ी है।

निकलते बैठते तुम लोगों से बातें हो जाती हैं। शाम को अंशुल, पाशी का साथ मिल जाता है। माँ कहे जा रही थी और निकित सोच रहा था। बुजुर्गों को शायद भौतिक सुख सुविधाओं से ज़्यादा अपनों के साथ की ज़रूरत होती है।

संगति का असर

एक बार एक राजा शिकार के उद्देश्य से अपने काफिले के साथ किसी जंगल से गुज़र रहा था। दूर-दूर तक शिकार नज़र नहीं आ रहा था। वे धीरे-धीरे घनघोर जंगल में प्रवेश करते गए। अभी कुछ ही दूर गए थे कि उन्हें कुछ डाकुओं के छिपने की जगह दिखाई दी। जैसे ही वे उसके पास पहुंचे कि पास के पेड़ पर बैठा तोता बोल पड़ा, पकड़ो-पकड़ो एक राजा आ रहा है। इसके पास बहुत सारा सामान है, लूटो-लूटो जल्दी आओ, जल्दी आओ।

तोते की आवाज़ सुनकर सभी डाकू राजा की ओर दौड़ पड़े। डाकुओं को अपनी ओर आते देख कर राजा और उसके सैनिक दौड़ कर भाग खड़े हुए। भागते-भागते कोसों दूर निकल गए। सामने एक बड़ा सा पेड़ दिखाई दिया। कुछ देर सुस्ताने के लिए उस पेड़ के पास चले गए। जैसे ही पेड़ के पास पहुंचे कि उस पेड़ पर बैठा तोता बोल पड़ा, आओ राजन, हमारे साधु महात्मा की कुटिया में आपका स्वागत है। अन्दर आइये, पानी पीजिये और विश्राम कर लीजिये। तोते की इस बात को सुनकर राजा हैरत में पड़ गया और सोचने लगा कि एक ही जाति के दो प्राणियों का व्यवहार इतना अलग-अलग कैसे हो सकता है! राजा को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह तोते की बात मानकर अन्दर साधु की कुटिया की ओर चला गया। राजा साधु महात्मा को प्रणाम कर उनके समीप बैठ गया और अपनी सारी कहानी सुनाई और फिर धीरे से पूछा, ऋषिवर इन दोनों तोतों के व्यवहार में आखिर इतना अंतर क्यों है? साधु महात्मा ने पहले सारी बातें धैर्य से सुनी और फिर बोले, ये कुछ नहीं राजन, बस संगति का असर है। डाकुओं के साथ रहकर तोता भी डाकुओं की तरह व्यवहार करने लगा है। और उनकी ही भाषा बोलने लगा है। अर्थात् जो जिस वातावरण में रहता है वह वैसा ही बन जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मूर्ख भी विद्वानों के साथ रहकर विद्वान बन जाता है। और अगर विद्वान भी मूर्खों की संगत में रहता है तो उसके अन्दर भी मूर्खता आ जाती है। इसलिए हमें संगति सोच समझ कर करनी चाहिए।

खुशी किसमें...

एक औरत बहुत महंगे कपड़े में अपने मनोचिकित्सक के पास गई और बोली 'डॉ. साहब! मुझे लगता है कि मेरा पूरा जीवन बेकार है, उसका कोई अर्थ नहीं है। क्या आप मेरी खुशियां ढूंढ़ने में मदद करेंगे?'

मनोचिकित्सक ने एक बूढ़ी औरत को बुलाया जो वहाँ साफ-सफाई का काम करती थी और उस अमीर औरत से बोला - 'मैं इस बूढ़ी औरत से तुम्हें यह बताने के लिए कहूंगा कि कैसे उसने अपने जीवन में खुशियां ढूंढ़ी। मैं चाहता हूँ कि आप उसे ध्यान से सुनें।'

तब उस बूढ़ी औरत ने अपना झाड़ू नीचे रखा, कुर्सी पर बैठ गई और बताने लगी - 'मेरे पति की मलेरिया से मृत्यु हो गई और उसके 3 महीने बाद ही मेरे बेटे की भी सड़क हादसे में मौत हो गई। मेरे पास कोई नहीं था। मेरे जीवन में कुछ नहीं बचा था। मैं सो नहीं पाती थी, खा नहीं पाती थी, मैंने मुस्कुराना बंद कर दिया था। मैं स्वयं के जीवन को समाप्त करने की तरकीबें सोचने लगी थी। तब एक दिन, एक छोटा बिल्ली का बच्चा मेरे पीछे लग गया जब मैं काम से घर आ रही थी। बाहर बहुत ठंड थी इसलिए मैंने उस बच्चे को अंदर आने दिया। उस बिल्ली के बच्चे के लिए थोड़े से दूध का इंतज़ाम किया और वह सारी प्लेट सफाचट कर गया। फिर वह मेरे पैरों से लिपट गया और चाटने लगा। उस दिन बहुत महीनों बाद मैं मुस्कुराई। तब मैंने सोचा कि यदि इस बिल्ली के बच्चे की सहायता करने से मुझे खुशी मिल सकती है, तो हो सकता है कि दूसरों के लिए कुछ करके मुझे और भी खुशी मिले। इसलिए अगले दिन मैं अपने पड़ोसी, जो कि बीमार था, के लिए कुछ बिस्किट्स बना कर ले गई। हर दिन मैं कुछ नया और कुछ ऐसा करती थी जिससे दूसरों को खुशी मिले और उन्हें खुश देख कर मुझे खुशी मिलती थी। आज मैंने खुशियां ढूंढ़ी हैं दूसरों को खुशी देकर।'

यह सुनकर वह अमीर औरत रोने लगी। उसके पास वह सब था जो वह पैसे से खरीद सकती थी। लेकिन उसने वह चीज़ खो दी थी जो पैसे से नहीं खरीदी जा सकती।

मित्रों! हमारा जीवन इस बात पर निर्भर नहीं करता कि हम कितने खुश हैं अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि हमारी वजह से कितने लोग खुश हैं।

तो आइए आज शुभारम्भ करें इस संकल्प के साथ कि आज हम भी किसी न किसी की खुशी का कारण बनें।

नवरंगपुर-ओडिशा। सेवाकेन्द्र में आने पर डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर अजीत कुमार मिश्रा का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं आर.एंड बी. के सुपरीन्टेंडेंट इंजीनियर प्रदीप कुमार समल तथा अन्य।

भुवनेश्वर-ओडिशा। दिव्यांगों की समग्रता और समानता हेतु आयोजित जन जागृति रैली का शुभारंभ करते हुए नितिन चंद्रा,आई.ए.एस., सन्यासी बेहेरा,ओ.ए.एस.,फिज़िकली चैलेन्ज्ड, ब्र.कु. सूर्यमणि,मा.आबू, ब्र.कु. लीना तथा अन्य।

सीतापुर-उ.प्र.। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के 50वें स्मृति दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित करने के पश्चात् सी.ओ. अवधेश कुमार पाण्डेय, आर.आई उदय प्रताप सिंह तथा ब्र.कु. योगेश्वरी।

खोरधा-ओडिशा। आई.पी.एस. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुराधा। साथ हैं सांसद प्रसन्न कुमार पाटशाणी तथा अन्य अतिथिगण।

बरेली-सिविल लाइन (उ.प्र.)। उत्तरायणी मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी में ब्र.कु. नीता को प्रशस्ति पत्र देते हुए मेला स्टॉल प्रभारी विपिन चन्द्र वर्मा, कोषाध्यक्ष के.पी.एस. बिष्ट व अन्य।

औरंगाबाद-बिहार। प्रजापिता ब्रह्माबाबा के 50वें स्मृति दिवस पर पुष्पों की माला अर्पित करते हुए ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. सोनी, वार्ड कमिश्नर संजय कुमार, ब्र.कु. दिनेश, ब्र.कु. कमलेश तथा अन्य भाई-बहनें।